Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
January to March 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLV

भीष्म साहनी के कथा साहित्य में सामाजिक सरोकार

डॉ. अनुषा बंधु*

* सहायक आचार्य(वि.सं.यो.) (हिन्दी) राजकीय महाविद्यालय, सेमारी (राज.) भारत

शोध सारांश – वर्तमान समाज में कथा साहित्य अपनी लोकप्रियता के कारण साधुनिक साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा अधिक प्रतिष्ठित एवं प्रौढ विद्या के रूप में उभरकर सामने आया है। साहित्य और सभाज एक–दूसरे है पूरक है,एक का प्रभाव दूसरे पर दिखाई देना स्वाभाविक है। साहित्य को समाज के समाज को साहित्य के बगैर परिलक्षित कर पाना बेहद दुष्कर है।'साहित्य समाज का दर्पण है' और साहित्यकार इस दपर्ण का सजग,सचेत अंग।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'साहित्य की महता'को लोकजागरण की चेतना से सम्बद्ध मानते हुए कहा है कि 'साहित्य में जो शक्ति छिपी रहती है वह तोप, तलवार और बम के गोलों में भी नहीं पायी जाती। यूरोप में हानिकारिणी रूढ़ियों का उद्घाटन साहित्य ने ही किया,जातीय स्वातंर्त्य के बीज उसी ने बोए है... पोप की प्रभुता को किसने कम किया है?फ्रांस में प्रजा की सत्ता का उत्पादन और उन्नयन किसने किया है?पदाक्रान्त इटली का मस्तक किसने ऊँचा उठाया है?साहित्य ने,साहित्य ने,साहित्य ने। साहित्यकार समाज का सबसे संवेदनशील प्राणी होता है जो समाज की नित्य प्रति घटित होने वाली घटनाओं को उसके अनुकूल–प्रतिकूल प्रभावों एवं अनुभवों को आधार बनाकर अपनी सृजनमूलक इमारत खड़ी करता है ताकि समाज की विसंगतियों को अनावृत कर समाज का पथ प्रेम एवंअपनेपन से दीप्तिमान कर सके। ऐसे ही साहित्यकार भीष्म साहनी है जिन्होंने स्वातंर्त्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य को समृद्ध किया। कथा साहित्य में अन्तर्विरोधों व जीवन के जकड़े मध्यवर्ग के साथ निम्नवर्ग की जिजीविषा को उजागर करने में उनकी जीवन्तता उन्हें अन्य साहित्यकारों में अग्रणी साबित करती है।

प्रस्तावना – भीष्म साहनी आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य के प्रमुख स्तम्भों में से एक है। इन्हें हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद की परम्परा का लेखक माना जाता है क्योंकि ये अपनी लेखनी मे सदैव मानवीय सरोकारों के हिमायती रहे। साहित्य के प्रति अपने समर्पण,अथक श्रम और सतत साहित्य साधना के द्वारा भीष्म साहनी ने हिन्दी साहित्य जगत में अपना विशिष्ट स्थान बनाया है । भीष्म साहनी का रचना संसार हिन्दी साहित्य कोष को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण योगदान रखता है। इनकी लेखनी में सामाजिक सरोकार के साथ जीवन मूल्य यथार्थवादी दृष्टिकोण के साथ हमेशा दिखाई पड़ता है। इनका रचनात्मक संसार जीवन के कई उतार–चढ़ाव के बावजूद संवेदना के स्तर पर अविचलित रहा है। किसी भी विचार दर्शन या चिंतन के प्रभाव को एक विशिष्ट सीमा तक ही भीष्म जी ने ग्रहण किया है। यह सच है कि प्रगतिशील विचारधारा के प्रमुख कहानीकारों में उनका नाम लिया जाता है पर उनके साहित्य पर दृष्टिपात करें तो स्पष्ट होगा कि वह मूलत: मानवतावादी है जो कि सामाजिक दर्शन से प्रभावित है।

भीष्म साहनी की कहानियों का मुख्य ध्येय देश का मध्य और निम्न मध्यमवर्गीय समाज है। हिन्दी के जिन कहानीकारों ने प्रेमचंद की परम्परा को स्वीकारा है या आत्मसात किया है उनमे ये अलग ही पहचाने जाते है क्योंकि बनावट नाम की कोई भी चीज उनमें कहीं भी नहीं है। इनके कथा साहित्य में आधुनिकता बोध और यथार्थवादी विचारधारा के अन्तर्विरोधों को सामाजिक प्रसंगों में व्यक्त किया है। उनकी कहानियों में कहीं भी अद्भुत शक्ति पर उनका विश्वास नहीं है। उनके लिए तो मानव जीवन और मानवीय जीवन के सुख–दुख ही सब कुछ है।

भीष्म साहनी का आगमन जिस युग में हुआ वह युग सामाजिक परिस्थितियों के लिए बड़ा चर्चित एवं चिन्तन परक रहा है। देश–विभाजन की त्रासदी ने समाज को झकझोर डाला वहीं आजादी के बाद बदलती परिस्थितियों से जनता के मोहभंग की स्थिति ने सामान्यजन एवं रचनाकारों को प्रभावित किया। सामाजिक जीवन की समस्त समस्याओं के प्रति भीष्म साहनी ने चिंतनमनन किया है। औद्योगीकरण, मशीनीकरण के प्रभाव से जो परिवर्तन हुआ उस परिवर्तन को रोका नहीं जा सकता है और परिणामस्वन्य जीवन मूल्यों मे भी परिवर्तन आया। उनके लिए मनुष्य में स्नेहभाव साहचर्य और विश्वास अधिक महत्वपूर्ण है। मध्यवर्गीय लोगों के बदलते जीवन मूल्यों को उद्घाटित करने के साथ–साथ उनके फूहड़ व्यवहार को भी व्यक्त किया है। साहनी जी का मानना है प्रगति के साथ–साथ वह निरन्तर अपने दायित्वों को भूलता जा रहा है,उसमें स्नेह जैसे मनोभाव लुप्त होते जा रहे है। परिवार का विघटन तो हो ही हो रहा है साथ ही घर में बुजुर्गों के प्रति प्रेम की बजाय उपेक्षा भाव जाग्रत हो रहा है और जिस समाज में पैसे के तराजू पर प्रसन्नता तोली जाती हो,प्रेम भाव और सहानुभूति तोली जाती हो,ऐसा समाज विकसित समाज नहीं कहलाया जा सकता है। 'चीफ की दावत' कहानी कुछ यह संदेश देती है।कहानी में रामनाथ नाम का व्यक्ति है,जिसके घर शाम को चीफ के लिए दावत है। उनकी मां बहुत बूढी और बेडौल तथा निरक्षर देशी, महिला है।हालांकि रामनाथ पढ़ाने लिखाने और ओहदेदार बनाने में वह अपना सबकुछ न्यौछावर कर देती है। रामनाथ और उसकी पत्नी इस बात से परेशान है कि चीफ की दावत के समय माँ को कहाँ छिपाया जाए ताकि चीफ उसकी माँ को न देख पाए और बेइज्जती होने से

बच जाए। जिस बात से रामनाथ सबसे ज्यादा परेशान था, अंत में वहीं होता है,चीफ को उस पूरी दावत में यदि कुछ पसन्द आता का है तो मां के द्वारा बनाई गई फुलकारी। बेटे बहू के व्यवहार से तंग माँ हरिद्वार जाने का विचार कर लेती है, पर दावत की सफलता का कारण माँ को पाकर गले लगा लेता है। लेकिन जब माँ को यह पता चलता है की एक नई फुलकारी बनाकर चीफ को भेंट कर देने से मेरे बेटे की पदोन्नति हो जाएगी तो हरिहार जाने विचार छोडकर एक बार पुनरू बेटे के भविष्य के लिए अपनी रोशनी की अन्तिम किरण भी उस पर समर्पित कर देती है। मध्यमवगीय जीवनका यचार्थ जो आजादी के बाद देश में विकसित हुआ उसमे जीवन की विसंगतियाँ, असामाजिकता से सराबोर हो गयी। कहानी का उदाहरण द्दष्टय है–'और माँ,आज जल्दी सो नहीं जाना,तुम्हारे खर्राटों की आवाज दूर तक जाती है। माँ लज्जित सी आवाज में बोली,क्या करूँ,मेरे बस की से बात नहीं है। जब से बीमारी से उठी हूँ नाक से साँस नहीं ले सकती।' इस कहानी के माध्यम से साहनी जी ने स्पष्ट किया है हमारे समाज में एक है जो रिश्तों को जीता है इन्हें निभाने के लिए हर संघर्ष का सामना करता है। जैसे बेटे की तरक्की की खातिर नजरे कमजोर होते हुए भी फुलकारी बनाने का प्रण करती है। वहीं दूसरा वर्ग का पढ़ा–लिखा मध्यम वर्ग है जो तरक्की हेतु रिश्तों को बाजार में लाता है।

मानवीय ऊष्मा के संवेदनशील कथाकार भीष्म साहनी हिन्दी के महान कथाशिल्पी और 'तमस' जैसी कालजयी रचना के रचनाकार है। मानवीय मूल्यों के वे बड़े हिमायती थे, उन्होंने विचारधारा को अपने साहित्य पर कभी हावी नहीं होने दिया। वामपंथी विचारधारा के साथ जुड़े होने के साथ वे मानवीय मूल्यों को कभी ओझल नहीं होने देते। इस का उदाहरण उनका कालजयी उपन्यास 'तमस' है। धर्म के आधार पर देश के बँटवारे और उसकी त्रासदी को अपनी आँखों से देखा था। इस उपन्यास में साहनी जी मूल उत्स की खोज करते हैं और उसके विकास की स्थितियों को बहुत बारीकी से विश्लेषित करते हैं।'अमृतसर आ गया' कहानी उनकी एक विशिष्ट कहानी हैजिसमें उस दब्बू बाबू के मनोविज्ञान का सूक्ष्म चित्रण किया है जो अमृतसर आते ही शेर हो जाता है और उनके अन्दर दबी हुई साम्प्रदायिकता हिंसा का उग्र रूप धारण कर लेती है। भीष्म साहनी ने माँ की ममता पर एक बेहद रोचक कहानी लिखी है – पाली। इस कहानी में विभाजन के समय एक हिन्दू परिवार का बच्चा पाकिस्तान में बिछुड़ जाता है वहाँ उस बच्चे को एक मुस्लिम परिवार पालता है। लेकिन कुछ वर्षों बाद ऐसी परिस्थिति बनती है कि वह बच्चा अपने हिन्दू माँ–बाप के पास लौट आता है । जिस मुसलमान दम्पति ने उसकी परवरिश की,उसके दिल पर क्या बीती और जब वह अपने सनातनी परिवेश में लौटा तो उसके मन पर इसका क्या प्रभाव पड़ा,उसका जो चित्रण भीष्म साहनी ने किया है,इससे एक तरफ ममता के अधिकार का प्रश्न अनायास उठता है,तो दूसरी ओर मनुष्य और मनुष्य के बीच धर्म द्वारा खड़ी की गई कृत्रिम दीवारों का भी एक कचोटने वाला अहसास बरबस मनपर आघात करता है।

भीष्म साहनी का व्यक्तित्व सरल किन्तु सुदृढ़ है।उनकी मानवीयता सतही हमदर्दी ना होकर एक गहरी सामाजिक दृष्टि की उपज है। यह दृष्टि विशाल है अर्थात् सामाजिक है। भीष्म साहनी बन्द कमरे के रचनाकार ही नहीं हैं।उनका कर्मक्षेत्र इतना विशाल हैं और स्वयं उन्होंने अपने कर्मक्षेत्र को विस्तृत किया है कभी सम्पादक बनकर, तो कभी रंगकर्मी या कभी अभिनेता बनकर – हर क्षेत्र में अपना सुदृढ़ व्यक्तित्व का परिचय देते चलते है।

भीष्म जी के कथा साहित्य की विशिष्टता है कि उसमें कलात्मकता को बनाए रखकर अपने प्रगतिशील चिन्तन के संप्रेषण की क्षमता है। उनका कथा साहित्य उनके जीवन दर्शन का रूपायन कहा जा सकता है। उनके कथा साहित्य में वैज्ञानिक चिन्तन इतिहास बोध एवं सामाजिक सरोकार ने भी स्थान पाया है। उनका कथा संसार अंतर्विरोधों व जीवन के द्वंदों, विसंगतियों से जकड़े मध्य वर्ग के साथ ही निम्न वर्ग की जिजीविषा और संघर्षशीलता को व्यक्त करता चलता है। नई कहानी आन्दोलन में कुछ समर्थ,किंचित प्रचारप्रिय लेखकों के नाम बढ़–चढ़कर सामने आए। भीष्म जी ऐसी आत्मश्लाघा से हमेशा दूर रहे।वे सदैव लेखक कहलाने के लोभ से निर्लिप्त रहकर रचना कर्म को,आवश्यक सामाजिक कर्म मानकर उसमें रत रहे। वर्तमान समय में नए प्रकार की समस्याओं को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी रचनाएँ अधिक प्रासंगिक होती जा रही है। कृष्ण बलदेव वैद का यह कथन उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को समझने में विशेष है–'एक लेखक और व्यक्ति के रूप में उनकी आवाज शान्त और शुद्ध थी और मानवीय आश्वासन से गूंजती थी। उनकी अपार लोकप्रियता किसी भी अश्लील स्वाद का नतीजा नहीं थी बल्कि उनकी साहित्यिक योग्यताओं का पुरस्कार थी– उनकी तीक्ष्ण बुद्धि,उनकी कोमल विडम्बना उनका सर्वव्यापी हास्य चरित्र में उनकी गहरी अंतर्दृष्टि, एक कलाकार के रूप में उनकी महारत और मानव हृदय की इच्छाओं की उनकी गहरी समझ।'

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि भीष्म साहनी ने अपनी बहुआयामी प्रतिमा को विविध रूपों में रुपायित किया है। जिससे साहित्य की सभी विधाएँ जीवन्त और स्पंदनशील हो उठी है। उनकी सभी कृतियां उन्हें सर्वश्रेठ लेखक,सफल कहानीकार, श्रेष्ठअनुवादक,उच्चकोटि का कलाकार सिद्ध करती है। उन्होंने जीवन के क्षण–क्षण से बटोरी जाने वाली अनुभूतियों और पग–पग पर होने वाले अनुभवों को कहानी,नाटक,बालसाहित्य उपन्यास में आलेखित किया है। भीष्म साहनी का समग्र साहित्य युग का सजीव प्रतिबिंब औरे जीवन की विविधता का यथार्थ चित्र है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी साहित्य की महत्ता,पृ.स. 6
2. भीष्म साहनी,चीफ की दावत से
3. हिन्दी समय / मानवीय सरोकारों के रचनाकार,भीष्म साहनी –लेख से
4. ट्रेलिंग्स ऑफ ए लोनली वायाम/आउटलुक इंडिया.कॉम 28 जुलाई2003
5. विकिपिड़िया से प्राप्त जानकारी

****